



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली

हिन्दी कक्ष की ओर से नव वर्ष मंगलमय हो!

2026

जनवरी					फरवरी					रवि सोम मंगल बुध बृह शुक्र शनि	मार्च					अप्रैल				
	4	11	18	25	1	8	15	22			1	8	15	22	29		5	12	19	26
	5	12	19	26	2	9	16	23			2	9	16	23	30		6	13	20	27
	6	13	20	27	3	10	17	24			3	10	17	24	31		7	14	21	28
	7	14	21	28	4	11	18	25			4	11	18	25		1	8	15	22	29
1	8	15	22	29	5	12	19	26			5	12	19	26		2	9	16	23	30
2	9	16	23	30	6	13	20	27			6	13	20	27		3	10	17	24	
3	10	17	24	31	7	14	21	28			7	14	21	28		4	11	18	25	
मई					जून					रवि सोम मंगल बुध बृह शुक्र शनि	जुलाई					अगस्त				
31	3	10	17	24		7	14	21	28			5	12	19	26	30	2	9	16	23
	4	11	18	25	1	8	15	22	29			6	13	20	27	31	3	10	17	24
	5	12	19	26	2	9	16	23	30			7	14	21	28		4	11	18	25
	6	13	20	27	3	10	17	24			1	8	15	22	29		5	12	19	26
	7	14	21	28	4	11	18	25			2	9	16	23	30		6	13	20	27
1	8	15	22	29	5	12	19	26			3	10	17	24	31		7	14	21	28
2	9	16	23	30	6	13	20	27			4	11	18	25		1	8	15	22	29
सितम्बर					अक्टूबर					रवि सोम मंगल बुध बृह शुक्र शनि	नवम्बर					दिसम्बर				
	6	13	20	27		4	11	18	25		1	8	15	22	29		6	13	20	27
	7	14	21	28		5	12	19	26		2	9	16	23	30		7	14	21	28
1	8	15	22	29		6	13	20	27		3	10	17	24		1	8	15	22	29
2	9	16	23	30		7	14	21	28		4	11	18	25		2	9	16	23	30
3	10	17	24		1	8	15	22	29		5	12	19	26		3	10	17	24	31
4	11	18	25		2	9	16	23	30		6	13	20	27		4	11	18	25	
5	12	19	26		3	10	17	24	31		7	14	21	28		5	12	19	26	

वर्ष 2026 - अवकाश विवरण

मकर संक्रांति	14 जनवरी	बुधवार	दीपावली "अमूर्त विश्व धरोहर" (यूनेस्को)		जन्माष्टमी (वैष्णव)	04 सितम्बर	शुक्रवार
गणतंत्र दिवस	26 जनवरी	सोमवार			महात्मा गांधी जन्मदिवस	02 अक्टूबर	शुक्रवार
होली	04 मार्च	बुधवार			दशहरा	20 अक्टूबर	मंगलवार
*ईद-उल-फितर	21 मार्च	शनिवार			दिवाली (दीपावली)	08 नवंबर	रविवार
रामनवमी	26 मार्च	बृहस्पतिवार			गोवर्धन पूजा	09 नवंबर	सोमवार
महावीर जयंती	31 मार्च	मंगलवार			गुरु नानक जन्मदिवस	24 नवम्बर	मंगलवार
गुड फ्राइडे	03 अप्रैल	शुक्रवार			क्रिसमस डे	25 दिसम्बर	शुक्रवार
बुद्ध पूर्णिमा	01 मई	शुक्रवार			* चाँद दिखने के कारण मीडिया (टी.वी./आकाशवाणी/समाचार पत्र आदि) के माध्यम से भारत सरकार यदि उपर्युक्त छुट्टियों की तारीखों में परिवर्तन की घोषणा करती है तो संस्थान तदनुसार अपने आप ही विषयान्तर्गत छुट्टियों का अनुपालन करेगा और इस संबंध में कोई नोटिस जारी नहीं किया जाएगा।		
*ईद-उल-जुहा (बकरीद)	27 मई	बुधवार					
*मुहर्रम	26 जून	शुक्रवार					
स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त	शनिवार					
*मिलाद-उल-नबी या ईद-ए-मिलाद (प्रोफेट मोहम्मद का जन्मदिन)	26 अगस्त	बुधवार					



**खल परिहास होइ हित मोरा। काक कहहिं कलकंठ कठोरा।।
हंसहि बक दादुर चातकही। हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही।।**

किन्तु दुष्टों के हंसने से मेरा हित ही होगा। मधुर कण्ठ वाली कोयल को कौए तो कठोर ही कहा करते हैं। जैसे बगुले हंस को और मेंढक पपीहे को हंसते हैं, वैसे ही मलिन मन वाले दुष्ट निर्मल वाणी को हंसते हैं।
—श्रीरामचरितमानस / 9

स्वागत

- स्थापना अनुभाग—I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/2025/471228 दिनांक 05.12.2025 के अनुसार **प्रो. संतोष एस.** ने 01.12.2025 से संस्थान में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल-12 में सेन्स केंद्र में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
प्रो. संतोष एस. को उनकी नियुक्ति के तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) संस्थान द्वारा प्रायोजित 'युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप' भी प्रदान की गई है।
- स्थापना अनुभाग—I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/2025/470854 दिनांक 04.12.2025 के अनुसार **प्रो. पुष्पराज पटेल** ने 01.12.2025 से संस्थान में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल-11 में ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
प्रो. पुष्पराज पटेल को उनकी नियुक्ति के तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) संस्थान द्वारा प्रायोजित 'युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप' भी प्रदान की गई है।
- स्थापना अनुभाग—I से प्राप्त संदर्भ सं. IITD/IES1/2025/412453

दिनांक 11.06.2025 के अनुसार **प्रो. उमाकांत साहू** ने 05.12.2025 से संस्थान में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल-12 में जैव रासायनिक इंजीनियरी एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

प्रो. उमाकांत साहू को उनकी नियुक्ति के तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) संस्थान द्वारा प्रायोजित 'युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग—I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/2025/472983 दिनांक 11.12.2025 के अनुसार **प्रो. मनीष पुरुषोत्तम मनोहर** ने 05.12.2025 से संस्थान में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल-11 में परिवहन अनुसंधान एवं चोट रोकथाम केन्द्र में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

प्रो. मनीष पुरुषोत्तम मनोहर को उनकी नियुक्ति के तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) संस्थान द्वारा प्रायोजित 'युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग—I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. DIS/417/2025 दिनांक 02.12.2025 के अनुसार **प्रो. अर्घ्य राय** ने 28.11.2025 से संस्थान में

सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल-12 में प्रबन्ध अध्ययन विभाग में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

प्रो. अर्घ्य राय को उनकी नियुक्ति के तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) संस्थान द्वारा प्रायोजित 'युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. 2647 (6)/2025/ESTT-2 दिनांक 01.12.2025 के अनुसार **श्री कृष्ण कुमार** ने 20.11.2025 से संस्थान में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल-6 में कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। उन्हें तत्काल प्रभाव से संज्ञानात्मक और व्यवहार विज्ञान प्रयोगशाला में नियुक्त किया गया है।

त्यागपत्र स्वीकृत

स्थापना अनुभाग-1 से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-II/pers.(27520)/2025 दिनांक 11.12.2025 के अनुसार श्री मोहन सिंह, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी (भौतिकी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था, जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 11.12.2025 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री मोहन सिंह को 11.12.2025 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु पूर्ण होने पर 31 दिसंबर, 2025 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :-

श्री परमेश्वर शाह (27120), तकनीकी सहायक, शिवालिक छात्रावास



श्री परमेश्वर शाह ने 24 जनवरी, 1990 को संस्थान में ग्रुप 'डी' अटेन्डेन्ट के रूप में 800-1150/-रु. के वेतनमान में कार्यभार ग्रहण किया था। 01 फरवरी, 1998 को आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत आपको 3050-4590/-रु. के वेतनमान में चयनित किया गया। 01 सितम्बर, 2008 में आपको ग्रेड वेतन 2000/-रु. में उन्नयन दिया गया। 04 अप्रैल, 2016 में आपको ग्रुप 'डी' से ग्रुप 'सी' में कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में नियोजित किया गया। 01 सितम्बर, 2018 को एमएसीपी के अन्तर्गत आपको वेतन लेवल-4 में उन्नयन दिया गया। 22 दिसम्बर, 2022 को आर. ऐन्ड पी.आर. एस. के अन्तर्गत आपको लेवल-5 में पुनःपदनामित किया गया। श्री परमेश्वर शाह मिलनसार एवं मेहनती तकनीकी सहायक रहे हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त स्टाफ सदस्य को भावभीनी विदाई देते हुए उनके व उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

सोच की सचेतन प्रक्रिया

पूरे ब्रह्मांड में मनुष्य कण मात्र भी नहीं है, लेकिन वह स्वयं को, अपनी समस्याओं को बड़ा करके आंकता है। जब दृष्टिकोण में विस्तार आ जाता है, तब हम सभी समस्याओं से पार पा लेते हैं...

मन मुख्य रूप से स्मृति के एक विशेष संग्रह के आधार पर काम करता है। यह स्मृति का एक जटिल जाल है। यह स्मृति आपके जीवन में जागते और सोते हुए हर पल में जमा हो रही है। आपने जो स्मृति जमा की है, उसके अधिकांश भाग के बारे में आप

अचेतन हैं, क्योंकि वह बहुत बड़ी मात्रा में जमा हो रही है। कई काम हम आसानी से करते हैं। उदाहरण के लिए दो टांगों पर चलने जैसा साधारण काम मात्र आपकी हड्डियों और मांसपेशियों के कारण नहीं होता, बल्कि आपके पास संचित स्मृति के कारण भी होता है। शरीर याद रखता है कि चलते कैसे हैं, अगर आप वह भूल जाएं तो आप चल नहीं सकते।

जब हम स्मृति या यादश्च कहते हैं, तो लोग मन के बारे में सोचने लगते हैं, लेकिन शरीर में मन की अपेक्षा बहुत ज्यादा स्मृति होती है। यदि आपके दादा के दादा के दादा की नाक से आपके चेहरे की नाक मिलती है, तो आपके शरीर के अंदर किसी चीज को याद है कि उनकी नाक कैसी थी। आपका शरीर अब भी याद रखता है कि दस लाख साल पहले कोई व्यक्ति कैसा था, उसका असर अब भी दिखता है, तो शरीर की स्मृति मन की स्मृति से कहीं बड़ी है। इस स्मृति को हम कर्मगत छाप कहते हैं। एक ऐसा समय था, जब भारत में, समाज आपकी कर्मगत छाप को संभालने की कोशिश कर रहा था। इसी उद्देश्य से जातियाँ और गोत्र इत्यादि शुरू किए गए थे।

आपके विचार किस तरह के हैं, वह उस स्मृति से तय होता है, जो आपने इस जीवन में अपने जन्म से अब तक सचेतन रूप से जमा की है। इस सचेतन स्मृति को प्रारब्ध कहते हैं। लेकिन आपके अंदर ये विचार किस तरह की भावनाएं पैदा करते हैं, वह मुख्यतया स्मृति की एक अचेतन प्रक्रिया से आता है। वह स्मृति सचेतन स्मृति से कहीं बड़ी है और 'संचित' कहलाती है।

ब्रह्माण्ड का अत्यंत छोटा कण क्या सोचता और महसूस करता है, यह महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन लोग अपने सोचने और महसूस करने को ब्रह्मांडीय नृत्य से ज्यादा महत्वपूर्ण मानते हैं।

संचित का अर्थ है कर्म-तत्त्व का अचेतन संग्रह, जो अपने ही तरीके से कार्य करता रहता है। यह स्वयं को अभिव्यक्त करने के संदर्भ में सक्रिय नहीं है, लेकिन यह आपको लाखों अलग-अलग तरीकों से प्रभावित करने में सक्रिय है। क्या इसका मतलब यह है कि आप पूरी तरह से पूर्व निर्धारित हैं और आप कुछ बदल नहीं सकते? नहीं। इसी आधार की वजह से आप हैं। आप स्वयं को

क्या बनाना चाहते हैं, वह अब भी आपके ऊपर है। नियति कोई निर्धारित वस्तु नहीं है। नियति आपके शरीर के ढांचे की तरह है। यह आपकी लंबाई तय करती है, लेकिन यह हर चीज तय नहीं करती।

तो क्या आप अपने सोच को बदल सकते हैं? इस बात पर गौर करने के बजाय कि आप देखिए कि आपमें कैसे विचार और भावनाएं आ रही हैं, आप यह देखिए कि इस ब्रह्मांड में आप धूल के कण मात्र हैं। हमारी आकाशगंगा में, यह सौर मंडल एक छोटा कण है। उस छोटे कण में, पृथ्वी एक और छोटा कण है। उसमें, आपका शहर एक अत्यंत छोटा कण है। उस अत्यंत छोटे कण में, आप एक बड़े आदमी हैं! अगर आप अनुभव के स्तर पर इसे नहीं देख सकते, तो कम से कम बौद्धिक स्तर पर इस अस्तित्व में आप अपना स्थान समझ सकते हैं। अगर आप इतना समझ जाते हैं, तो एक नई आध्यात्मिक संभावना खुल जाती है—आप अलग तरह से घूमेंगे, अलग तरह से बैठेंगे, अलग तरह से सांस लेंगे और जीवन को अलग तरह से अनुभव करेंगे।

यह अत्यंत छोटा कण क्या सोचता और महसूस करता है, वह महत्वपूर्ण नहीं है। लेकिन ज्यादातर लोगों के लिए, वे जो सोचते और महसूस करते हैं, वह घटित हो रहे अद्भुत ब्रह्मांडीय नृत्य से अधिक महत्वपूर्ण है। यह एक बड़ी विसंगति है। पूरे ब्रह्मांड में आज सब कुछ बहुत बढ़िया चल रहा है, लेकिन बस एक विचार आपको परेशान और उदास कर सकता है। अगर आप बस यह देखते हैं, 'मैं जो सोचता हूँ और महसूस करता हूँ, वह बहुत बहुत महत्वपूर्ण नहीं है,' अगर आप अपने और अपने विचार और भावनाओं के बीच इस दूरी को ले आते हैं, तब वह एक सचेतन प्रक्रिया बन जाती है। तब आप कई तरीकों से कर्मगत प्रक्रिया से स्वतंत्र हो जाते हैं। अभी, आपके विचार और आपकी भावनाएं दोनों ही विवशतापूर्ण प्रक्रियाएं हैं। जब यह एक सचेतन प्रक्रिया हो जाती है, तब आप एक ऐसे तरीके से अचानक सशक्त हो जाते हैं कि लोग सोचते हैं कि आप अतिमानव हैं। लेकिन यह याद रखिए कि आपका उद्देश्य अतिमानव होना नहीं, बस मनुष्य होना है।

साभार—दैनिक जागरण
दिनांक 16 दिसम्बर, 2025